सत्यमेव जयते

जैविक गुणवत्ता वाणी

G20 भारत 2023 INDIA

(राष्ट्रीय जैविक संस्थान द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका)
प्रकाशन वर्ष - 2024 | अंक – 02

ई-पत्रिका

राष्ट्रीय जैविक संस्थान
(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
ए-32, सेक्टर-62, संस्थागत क्षेत्र, नोएडा, उत्तर प्रदेश – 201309

जैविक गुणवत्ता वाणी

अंक – द्वितीय, प्रकाशन वर्ष - 2024

संपादक मण्डल

डॉ. मीना कुमारी

डॉ. हेमंत कुमार वर्मा

डॉ. अश्विनी कुमार दुबे

विशेष आभार

निखिल प्रताप सिंह

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं।
उनसे राष्ट्रीय जैविक संस्थान और संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

राष्ट्रीय जैविक संस्थान

(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)

ए-32, सेक्टर -62, संस्थागत क्षेत्र, नोएडा, उत्तर प्रदेश – 201309

फ़ोन : +91 0120 2593600, ई-मेल: info@nib.gov.in

इस अंक में

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	राष्ट्रीय जैविक संस्थान 'गीत'	5
2.	चलो आज फिर एक बार	6
3.	जानती हूँ भीग जाऊँगी	7
4.	अरमानो की हवा	8
5.	मौन	9
6.	इश्क है शिर्क	10
7.	प्रेम की माया	11
8.	...वो माँ है...	12
9.	अभिवादन	13
10.	हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए	14
11.	चित्रकलाएँ	15

निदेशक महोदय की ओर से संदेश

संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की ओर से मिले सुझाव के अनुसार साहित्यिक रचनाओं, विभिन्न विषयों पर विचारों को साझा करने और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय जैविक संस्थान की ''जैविक गुणवत्ता वाणी'' नामक हिंदी की ई-पत्रिका का प्रकाशन अर्ध-वार्षिक आधार पर गत वर्ष 2023 से शुरू किया गया है। इस पत्रिका का प्रथम अंक (जनवरी-जून, 2023) जुलाई माह में प्रकाशित किया गया था ।

मुझे बताया गया है कि पत्रिका के प्रथम अंक को संस्थान के कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों ने काफी पसंद किया है । यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है जो ई-पत्रिका के प्रकाशन की उपयोगिता को सार्थक करती है ।

यह ई-पत्रिका संस्थान के कार्मिकों तथा उनके परिवारजनों को साहित्य, कला सृजन और उनके विचारों को साझा करने के लिए एक उपयोगी मंच प्रदान करती है । इस दिशा में आगे बढ़ते हुए पत्रिका का दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

प्रस्तुत अंक में, संपादक मंडल के मार्गदर्शन में, संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारजनों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे कि साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आदि विधाओं पर लिखे गए लेखों को समाहित किया गया है ।

मुझे विश्वास है कि हमारा यह प्रयास हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा । संस्थान के जिन कार्मिकों ने इस पत्रिका में अपने लेख देकर योगदान किया है, मैं उन्हें बधाई देता हूं तथा अपेक्षा करता हूं कि अन्य कार्मिक भी भविष्य में पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान देंगे।

संपादक मंडल के सभी सदस्य वैज्ञानिक अधिकारी होते हुए भी इस पत्रिका के प्रकाशन में इतना परिश्रम करते हैं, मैं इसके लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं। पत्रिका की साज-सज्जा, डिजाइनिंग आदि कार्य करने में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए श्री निखिल प्रताप सिंह, सहायक- ॥ विशेष रूप से प्रशंसा के पात्र हैं ।

- ० ह ० -

(डॉ. अनूप अन्वीकर)

निदेशक

राष्ट्रीय जैविक संस्थान 'गीत'

डॉ. अश्विनी कुमार दुबे 'शिव'
वैज्ञानिक ग्रेड – III

गौतमबुद्ध नगर में स्थित, अद्वितीय वो राष्ट्रीय संस्थान।
गुणवत्ता मूल्यांकन में है, जिसकी अति विशिष्ट पहचान ॥

जैविक सृजन प्रलय होते, जैविक संगम का स्थान।
जैविक शोध और नियामन, नवीकरण व अनुसंधान ॥

गुणवत्ता परीक्षण में रत, विज्ञानीगण का तन-मन।
जन सुरक्षा सुनिश्चित करते, यहाँ गुणी समग्र विद्वान् ॥

जैविक पथ पर अग्रणी है, वैज्ञानिकजन यहाँ महान।
राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा की है अद्भूत शान ॥

'शिव' की वाणी में कहता हूँ, ये जैविक गुणवत्ता वाणी।
स्वास्थ्य सुरक्षा प्राथमिक है, हमको है कर्त्तव्य निभानी ॥

****

चलो आज फिर एक बार

-रश्मि श्रीवास्तव,
वैज्ञानिक, ग्रेड – III

चलो आज फिर एक बार
करें उस अल्हड़ लड़की से मुलाकात
थोड़ी सी जो तुम में है
बस थोड़ी सी ही मुझमें बाकी है
नही समझती दुनियादारी
मेरे दिल को अक्सर लेकिन बहलाती है
एक वही तो है
जो मुझमें ;
मेरे लिए जी पाती है

बच्चों को बड़ा करते करते
ससुराल को घर बनाने में
जब-जब मैं खुद को भुला देती हूँ
माँ के सामने आते ही
वापस मुझे बिटिया बना जाती है
एक वही तो है
जो मुझमें
मेरे लिय जी पाती है

कई बार जिम्मेदारियाँ समझायी है उसे
जो माँ ने किया वो कहानियाँ सुनाई है उसे
पर सुनती कहाँ है वो
आज भी शीशे के सामने
बस एक मिनट और कहके खुद को संवारती है
एक वही तो है
जो मुझमें
मेरे लिए जी पाती है

हर रिश्ते की एक सीमा है
हर रिश्ता बंधा है जंजीरों में
हर दिल में छुपे उस दिल के किस्से
सबकी अपनी एक कहानी है..
किसको पढ़ूँ किसको सुनूँ
अब किसको क्या सुनाऊँ मैं
सोच के जब अक्सर चुप हो जाती हूँ
अंदर से मुझे दस्तक देके
चुपचाप मेरे पास आ जाती है
सुनती है मेरी खामोशी को
और बस ..शायरी मेरी बन जाती है ....
एक वही तो है
जो मुझमें
मेरे लिए जी पाती है।

जानती हूँ भीग जाऊँगी

रश्मि श्रीवास्तव,
वैज्ञानिक, ग्रेड – III

जानती हूँ भीग जाऊँगी, कागज़ की हूँ मैं
नहीं संभाल पाऊँगी
बिखर गयी तो,
बह गयी तो
हाथ भी दोगे तो टूट जाऊँगी मैं.....

कुछ बूँदें बारिश की, जो दिख रही हैं
बस दूर से ही
इस खिड़की के शीशों के उस पार
बुला रही हो जैसे
कह रही हो जैसे
तू बनी ही थी इन बूँदों के लिए
क्यूँ किसी किताब पे बैठी है गुमसुम
बाहर निकल,

ये बूँदें ही ले जाएँगी तुझे तेरी मंज़िल की ओर
बह जाने दे थोड़ा
बिखर जाने दे ख़ुद को
निखर जाने दे खुद को
मुस्कुरा के बंद कर ली आँखें मैंने कुछ देर
कुछ हौसला और बढ़ा लूँ मैं ..... तब तक
जानती हूँ भीग जाऊँगी मैं, कागज़ की हूँ मैं।

अरमानो की हवा

अहसान अहमद

जीव विज्ञानी, एस. आर. आर. डी. इकाई

राह गुजरती गयी ..... काफ़िला बनता रहा
चले दो थे हम ..... कारवाँ बनता रहा।

थक के चूर हुआ
मै सोलह से कुछ दूर हुआ
राह गुजरती हवा ने कहा
ठहर कुछ आराम करते है यहाँ।

ऐ हवा ये क्या हुआ
इतनी शिद्दत से बदन को छुआ
मै सो गया टूट कर ..... रह गया यहाँ।

तूने ऐ हवा मुझे उठने ना दिया
गुजर गयी वो लोह गामिनी .....
आँखो में बस गयी दामिनी
अब उठ ना पाउँगा मै, सुन ले ऐ हवा
जा घर मेरे.....
दे पैग़ाम जो भी हुआ।

सुन ऐ बहती हवा
माँ है वो जिसके दामन को तूने छुआ
चौखट पे बैठी है बीवी
शायद जिसका एहसास तुझे ना हुआ।

अब मै महसूस करता हुआ .....
दर्द-ए चुभन सहता हुआ
पहुँचा हु लोहे अक़्दस .....
लम्बा सफर तय करता हुआ
मेरा सफर अब लोट कर ना आ पायेगा
मेरी माँ के दिल को बहुत तड़पाएगा
रोयेगी वो भी छुप कर, बच्चो से मेरे देखा ना जायेगा।

ठहर ए हवा कुछ मेरी सुनती तू जा
है पैग़ाम बस इतना सा मेरा
पीछे छूट गए कुछ रिश्ते .....
रह गयी है एक माँ
दिया है वोट जब मै था यहाँ।

दे ही देना वो उम्मीद .....
जिसका भरोसा दिया
थक के मै चूर हुआ
घर की वोट से मै दूर हुआ
ए हवा ..... जा कर रहनुमाओ को बता
उस घर में जा कर पूरा करो..... जो वादा किया।

थक के चूर हुआ ..... मै अपनों से दूर हुआ।

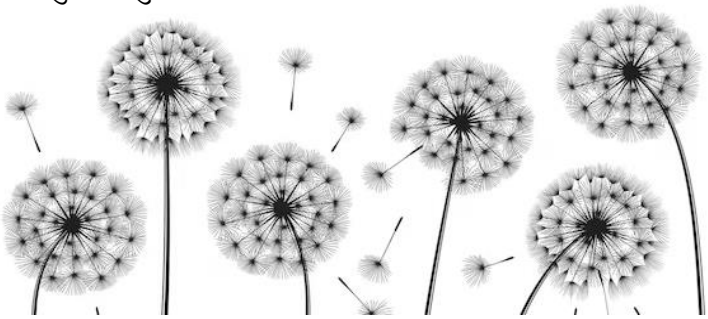

मौन

- डॉ. हेमंत कुमार वर्मा,
वैज्ञानिक – II, एवं प्रमुख, आई.टी. विभाग

मर गई मनुजता, हंस रही दनुजता।
मनुज से मनुज की न रही संवेदना।

नग्न हो दौड़ती है, भग्न हुई अस्मिता
हर तरफ चीखती है, प्रश्न यही पूछती है।
दोष मेरा क्या रहा, जो चीर मेरा हर लिया ?
जीव से जीव की, न रही दयालुता।
मर गई मनुजता.....।

रीत ये नई चली है, प्रीत की मधुर गली है
नई कोई हवा चली है, गीत यही घोलती है।
भाव मेरा क्या रहा, जो प्रेम मेरा छल लिया?
दृष्टि से दृश्य की, न रही सटीकता।
मर गई मनुजता.....।

बात मेरी जान लों, वक्त को पहचान लों
शत्रु भी विचित्र है, युद्ध भी सर्वत्र है।
क्या रक्त मेरा श्वेत है, जो अस्त्र मेरा दर लिया
दृष्टि को ईश की, न रही भयावता।
मर गई मनुजता.....।

वाणी को न मौन हो, शब्द न विराम हो
अग्नि को न जल मिले, क्रोध को बल मिले
देख लों दनुज तुम, दृढ़ यही कर लिया।
वीर बन लड़ रही, न रही मृदुलता।
मर गई मनुजता, हंस रही दनुजता।
मनुज से मनुज की, न रही संवेदना।

इश्क है शिर्क

-अहसान अहमद
जीव विज्ञानी, एस. आर. आर. डी. इकाई

वादा-ए इश्क मैं कर गया
जो ना करना था, वो भी कर गया।

काफ़िर मुझे इश्क-ए शिर्क कर गया
कर रहा है सजदा दर पे तेरे
अहसान.... जो खता इश्क में कर गया।

कहा मैंने .... जो उसने कहा
जो ना कहना था वो भी कर गया
हर खता को पहली समझ इश्क में
हर दूसरी खता को पहली कर गया।

कुछ इसकी.....कुछ उसकी रखी खबर
इश्क में खबर से अखबार बन गया
आधा अधूरा अलफ़ाज़ लिखा है टूटे दिल पे,
दिल जोड़ना था
तोड़ने की खता कर गया।

प्रेम की माया

अहसान अहमद
जीव विज्ञानी, एस. आर. आर. डी. इकाई

बिन राधा प्रेम ना होता
बिन प्रेम ना होते राम
एक कहलाया मर्यादा पुरषोत्तम.....दूजा कहलाये श्याम ।

बिन प्रेम है नगरी सुनी
बिन प्रेम ना होते काम
मिला तुझसे सब पाया
जैसे मिले सबरी को राम ।

नीलकंठ की डमरू बजे
नील गगन और चारो धाम
सब छोड़ो उस पर, वो जाने
बने या बिगड़े अपने काम ।

...वो माँ है...

अहसान अहमद
जीव विज्ञानी, एस. आर. आर. डी. इकाई

चलती है बन शेरनी ..... थामे हाथ
एक को लगाया गले ..... दूजे को लिए साथ।

खाक छानती फिरती है, बस जाना है हर हाल जाना है
सब्र इतना है, काफ़िला चला है साथ
राह गुजर, गुजर जाती है
थक कर थम जाती है, दे आवाज बैठ जाती है
छाओ में ..... कही बदल ना जाए साथ

चलती है बन शेरनी ..... थामे हाथ
एक को लगाया गले ..... दूजे को लिए साथ।
भूख है, लगी है प्यास
बेटो ने चलती माँ से लगायी आस
मांग लूँगी उनसे हिस्सा अपना
शायद हो उनको भी इतना एहसास
चलती है बन शेरनी ..... थामे हाथ
एक को लगाया गले ..... दूजे को लिए साथ।

कुछ दूर दिखे हैं वो, चले थे साथ
उम्मीद में भोजन पाने को बढ़ा दिए हाथ

सोचती है एक माँ.....
मैं तो थी स्वाभिमानी
करती थी मेहनत, ना की थी बेईमानी
फिर क्यों मुँह फेर लिया मुझसे
अच्छे वक़्त में रही जिनके साथ

चलती है बन शेरनी ..... थामे हाथ
एक को लगाया गले ..... दूजे को लिए साथ।

अभिवादन

डॉ. अश्विनी कुमार दुबे 'शिव'
वैज्ञानिक ग्रेड – III

अभिवादन मानव संचार की वह प्रक्रिया होती है जिसमें एक व्यक्ति,दूसरे को अपनी उपस्थिति से अवगत कराता है और दूसरे की उपस्थिति को स्वीकारता है। प्रायः इसमें दूसरे की उपस्थिति का स्वागत किया जाता है या उस पर प्रसन्नता जतलाई जाती है । अभिनंदन व अभिवादन में अंतर है, अभिनंदन योग्यता का सम्मान है और अभिवादन सामान्य शिष्टाचार है ।

अभिवादन के प्रकार अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं । कोई एक निश्चित प्रकार बताना गलत हो सकता है । आप जिस जगह रहते हैं वहीं के अभिवादन के प्रकार वहां की संस्कृति के अनुसार अपना सकते हैं ।

भारतवर्ष विविधताओं से भरा देश है यहां अनेक धर्म को मानने वाले, अलग अलग भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं । सभी का एक दूसरे से प्रणाम, अभिवादन करने के तरीके अलग-अलग हैं । प्रकृष्ट नमन ही 'प्रणाम' है, (प्रणाम = प्र + नमन) । नमः, नमस्ते, नमस्कार, नमन शब्दों का अर्थ है किसी के सम्मान में हाथ जोड़कर (अंजलि मुद्रा) झुकना । भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति में मुख्यतः पांच प्रकार के अभिवादन बताये गए है जो इस प्रकार हैं –

1. प्रत्युथान

किसी के स्वागत में उठकर खड़े होना, जैसे पाठशालाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों में जैसे ही कोई शिक्षक, अध्यापक या गुरु कक्ष में प्रवेश करता है तो विद्यार्थी, शिष्यगण उनके सम्मान में अपना आसन छोड़कर खड़े हो जाते हैं । इसी प्रकार कार्यालयों में, किसी समिति की बैठक में, किसी सभा इत्यादी में किसी श्रेष्ठ अथवा वरिष्ठ व्यक्ति के आगमन पर दुसरे कनिष्ठ लोग अपने स्थान पर खड़े हो जाते हैं ।

2. नमस्कार

इसका तात्पर्य है हाथ जोड़कर (अंजलि मुद्रा) सत्कार करना । स्वयं से श्रेष्ठ अथवा समकक्ष लोगों से नमस्कार किया जाता है । यह भारतवर्ष में बहुत ही व्यापक स्तर पर चलन में है ।

3. उपसंग्रहण

किसी बड़े व्यक्ति जैसे माता -पिता, बड़े भाई -बहन, बुजुर्ग, शिक्षक के पांव छूने की प्रक्रिया उपग्रहण है । इसमे व्यक्ति दायें हाथ से दायें पाँव और बायें हाथ से बायें पाँव को स्पर्श कर स्वयं से श्रेष्ट अपने स्नेही स्वजनों से आशीर्वाद की कामना करता है ।

4. साष्टांग

इस प्रकार का अभिवादन माता -पिता, आध्यात्मिक गुरु, ब्रह्मनिष्ठ धर्माचार्यों और देवालयों मे ही किया जाता है । पुरुषों और स्त्रियों के साष्टांग की विधि अलग है । एक पुरुष पांव, घुटने, पेट, सिर और हाथ (हथेलियों को अंजलि मुद्रा रखकर) के बल जमीन पर लेटकर साष्टांग करता है । जबकि एक स्त्री वज्रासन की स्थिति में ही अपने शीश को भूमि पर स्पर्श कर तथा शीश के आगे हथेलियों को अंजलि मुद्रा रखकर साष्टांग करती है ।

5. प्रत्याभिवादन

इसका अर्थ है अभिनन्दन का अभिनन्दन से उत्तर देना । जैसे कोई आपको मौखिक प्रणाम करता है तो आप भी उसे मौखिक प्रणाम करते हैं । जैसे श्री रामानंद सागर जी द्वारा निर्देशित रामायण धारावाहिक में आपने देखा होगा की जब भगवान विष्णु, भगवान शिव को 'प्रणाम' कहकर अपना शीश झुकाते हैं तो भगवान शिव भी विष्णु जी को 'प्रणाम' कहकर अपना शीश झुकाते हैं । ऐसे ही जो आत्मज्ञानी व्यक्ति हैं वे भी आपस में प्रत्याभिवादन करते हैं ।

भारत में विभिन्न भाषाओं में कुछ अत्यधिक प्रचलित मौखिक अभिवादन हैं जैसे हिंदी में नमस्ते, बंगाली में नोमोस्कर, पंजाबी में सत श्री अकाल, मराठी में नमस्कार, कन्नड़ में नमस्कारा, मलयालम में नमस्कारम, तमिल में वणक्खम, तेलगु में नमस्कारमु, गुजराती में नमस्ते, मिजोरम में चिबई, नागालैंड में सलेम, उर्दू में आदाब / सलाम वाले कुम, ओड़िया में नमस्कार आदि । "सुप्रभात", "शुभ दोपहर", "शुभ संध्या" - दिन के उचित समय पर अधिक औपचारिक मौखिक अभिवादन का उपयोग किया जाता है । "शुभ रात्रि" और "अच्छे दिन" को आमतौर पर अभिवादन के बजाय विदाई के वाक्यांशों के रूप में उपयोग किया जाता है ।

इसके अलावा कुछ क्षेत्र विशेष में अलग प्रकार से अभिवादन किया जाता है, जैसे बनारस में 'महादेव', मथुरा में 'जय श्री कृष्ण' व 'राधे राधे', अवध और पूर्वी उत्तरप्रदेश में 'राम-राम', गुजरात में जय जिनेद्र आदि । वस्तुतः ऐसे अभिवादन मौखिक ही होते हैं ।

हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए

-सरोज वर्मा, सहायक-I

ये जरूरी नहीं कि हमेशा हाथ पकड़ कर चले,
बस जब तक हो सके तो हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए।
ठंड लगे जब मुझे शर्ट (Shirt) उतार कर देनेवाला नहीं!
पर घर से निकलते में ये बोलने वाला चाहिए,
"शॉल रख लो ठंड होगी, फिर ना कहना भूल गई।"
ये ज़रूरी नहीं कि मुझे सब याद रहे,
ये भी तो ज़रूरी नहीं कि सब काम कमाल रहे,
ग़र खुद का खयाल ना रख पाऊँ बहुत व्यस्त हो जाऊँ,
और जो कुछ भूलूँ तो बस याद दिलाने वाला चाहिए!
ये जरूरी नहीं कि हमेशा हाथ पकड़ कर चले,
बस जब तक हो सके तो हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए ।

ज़माने में इंडिपेंडेंट विमेन (Independent Women) का ट्रेंड है आजकल,
पसैा कमाना शौक हो गया, बाहर आना जाना मौज हो गया।
मेरा कमाना जिसे औड (Odd) ना लगे, बाहर जाना मौज ना लगे,
जिसे फिक्र हो मेरे घर लौटने तक जो अकेले आराम ना करे,
जो घर के काम और बाहर के काम में फर्क़ ना करे
घर मे बठै ना खौफ ना करे, बस मेरे परवाज से हो मतलब
और जो किसी की नज़र को छोड़ मेरे कपड़ों पर भरोसा रखे
ऐसा ट्रेडीशनल इंडीपेंडेंट मैन (Traditional Independent Man) चाहिए
ये जरूरी नहीं कि हमेशा हाथ पकड़ कर चले,
बस जब तक हो सके तो हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए।

वैसे मैं उफ्फ ओह शिट (Oh Shit) के साथ हाय हाय भी कर लेती हूं
खुद से ही बातें कर सारे उलझने भी निपट लेती हूँ
पर कभी जो मैं थक जाऊँ, जो कभी ज्यादा बड़ बड़ाऊ
जो खुद को नाकामयाब पाऊँ या खुद को ही ना समझ पाऊँ
तो दो प्याली चाय बना कर साथ पीनेवाला चाहिए
जो समझे मेरे काबिल होने को, मेरे हुनर पर हो जिसे भरोसा
जिसे नाज़ हो मेरे आड़े तिरछे शौक पर
जो मेरे बचपने को दे ज़िंदगी ऐसा कामयाब इंसान चाहिए
ये जरूरी नहीं कि हमेशा हाथ पकड़ कर चले,
बस जब तक हो सके तो हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए।

परवरिश हुई है मेरी जा "बेटा धनिया ले कर आ" वाली
इसलिए मैं हूँ लाड़ली कुछ अलग नखरों वाली
पली हूँ इंसान बनकर परवरिश है लड़की ना लड़के वाली
मैं भी हूँ प्रथाओं से वाकिफ़ पर मिजाज़ कहता अलग कहानी
प्रथाओं को विज्ञान से जोड़ सम्मान करना सीखा है
बस कुछ इसी तरह सम्मान करने वाला चाहिए
ये जरूरी नहीं कि हमेशा हाथ पकड़ कर चले,
बस जब तक हो सके तो हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए ।

जो लाइफ (Life) को कभी ना थकनेवाला रास्ता समझे
जो फैन (Fan) हो राजेश खन्ना के डायलॉग (Dialogue) का
"बाबुमोशाय ज़िन्दगी लंबी नहीं बड़ी होनी चाहिए"
जिसे देख कर लगे बहुत कुछ सीखना बाकी है अभी
जिसे फुल स्टॉप (Full Stop) से ज्यादा एक्सक्लेमेशन (Exclamation) का हो शौक
और जो मेरे बचकाने प्लान बोले यो! लेट्स गो ऑन (Yo! Let's Go On)
बस ऐसा एक यार चाहिए क्योंकि मैं भी ये सब करूंगी।
ये जरूरी नहीं कि हमेशा हाथ पकड़ कर चले,
बस जब तक हो सके तो हाथ ना छोड़नेवाला चाहिए।

चित्रकलाएँ

मानवी कश्यप, कक्षा-6,
सुपुत्री, तारा चंद, वैज्ञानिक ग्रेड-III,
रक्त उत्पाद प्रयोगशाला

नाचता हुआ मोर

फूलदान

प्रकृति प्रदर्शनी

पुल परिदृश्य